महेन्द्रकुमार जैन न्यायाचार्य स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२००५)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
एक ज्ञानाराधक का स्मरण
सम्पादकीय वक्तव्यः
विषयानुक्रमणिका
खण्ड-१ – संस्मरण – आदराञ्जलि
राष्ट्र के सारस्वत जगत् के अग्रणी -- १
माँ सरस्वती के वरदपुत्र ---२
अपूर्व साहित्य सेवी--३
पूर्वाग्रह मुक्त विचार के धनी -- ४
स्याद्वाद विद्या के प्रकाशस्तम्भ --- ४
परम्परा और आधुनिकता के संगम -- ५
आशीर्वाद--- ५
साहित्य के मेरु शिखर -- ६
दर्शनशास्त्र के महान् विद्वान् --- ७
सम्पादन कला के आचार्य -- ७
दार्शनिक चिन्तन के मनीषी -- ७
एक प्रकाशमान नक्षत्र --८
सृजनात्मक प्रतिभा के धनी -- १०
परिनिष्ठित विद्वान् -- १०
अद्वितीय विद्वान् -- १०
वे सदा चिरस्मरणीय रहेंगे -- ११
उनकी विद्वत्ता विरल थी --- ११
हार्दिक कामना -- ११
विनोदप्रिय महेन्द्रकुमार जी ---१२
सन्देश --१२
सहाध्यायी और जैन न्याय-विद्यागुरु ---१३
उत्कृष्ट क्षयोपशम के धनी --- १४
प्रगतिशील विचारधारा के पोषक --- १५
हार्दिक शुभकामना -- १५
शुभकामना -- १६
शुभकामना -- १६
असाधारण विद्वान् --- १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारतीय दर्शन के तलस्पर्शी विद्वान् ---------- १६
बहुमुखी प्रतिभाके धनी ---------- १७
सरस्वती के महान् उपासक ---------- १८
असाधारण व्यक्तित्व के धनी ---------- १९
अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व ---------- १९
उत्कट मनीषा के धनी ---------- २१
वे उद्भट विद्वान् थे ---------- २२
अटूट तेजस्वी व्यक्तित्व ---------- २२
प्रखर प्रतिभाशाली ---------- २३
महान् दार्शनिक मनीषी ---------- २४
वरिष्ठ एवं गरिष्ठ साहित्यसेवी ---------- २५
निर्लिप्त साधक संत ---------- २५
उनका गुणगान ही वास्तविक श्रुत-आराधना ---------- २६
न्याय-जगत्के जाज्वल्यमान नक्षत्र ---------- २६
जो सदा चमकते रहेंगे ---------- २७
न्यायशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् ---------- २७
सादा जीवन और उच्च विचार के धनी ---------- २७
इस शताब्दी के महान् विद्वान ---------- २८
शुभकामना ---------- २८
महान् विभूति को शत शत शमन ---------- २८
सरस्वती के उज्ज्वल प्रकाशमान पुञ्ज ---------- २८
उच्चकोटि के विद्वान ---------- २९
बीसवी शताब्दी के प्रकाण्ड जैन दार्शनिक ---------- २९
आशावादी बुद्धिवाद के जनक पण्डितजी ---------- ३०
शुभकामना ---------- ३०
श्रद्धा सुमन ---------- ३१
मेरी श्रद्धाके दर्पण ---------- ३१
अगाध पांडित्य के धनी---------- ३२
बुन्देलभूमि का अद्भुत लाल ---------- ३२
शुभकामना ---------- ३२
प्रखर चेतना और लेखनी के धनी ---------- ३३
जैनदर्शन साहित्य के अनन्य सेवक ---------- ३३
जिनवाणी माँ के अनन्य उपासक ---------- ३४
असाधारण व्यक्तित्व के धनी ---------- ३४
मार्गदर्शक दार्शनिक न्यायाचार्यजी ---------- ३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हमारी आस्था के सुमेरु न्यायाचार्य -- ३६
शत् शत् नमन -- ३६
न्याय-शास्त्र के उदीयमान नक्षत्र -- ३७
शुभकामना -- ३७
शुभकामना -- ३७
श्रद्धाञ्जलि -- ३७
स्याद्वाद-शासन के सजग-आदर्श प्रहरी -- ३८
देखा तो नहीं, पर देख रहा हूँ उनको -- ३८
अनोखा व्यक्तित्व -- ३९
पण्डितजी स्वतंत्र चिन्क थे -- ३९
जैनदर्शन के आधुनिक मेरु --- ४०
डॉ कोठिया जी से जो सुना, जो गुना-- ४०
मेरे विद्यागुरु -- ४१
गम्भीर अध्येता -- ४१
विद्वानेव विज्ञानाति विद्वज्ज्जनपरिश्रमम् -- ४२
बचपन की कुछ यादें -- ४३
न्यायशास्त्र के तलस्पर्शी ज्ञाता -- ४४
स्मृति पत्राञ्जलि -- ४५
असाधारण विद्वत्ताके धनी -- ४६

खण्ड-२ – जीवन परिचय – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पं. महेन्द्रकुमरा जैन न्यायाचार्य – एक परिचय -- १
उन्हें वर्णीजी का परमार्श प्राप्त था --३
न्यायाच्रय पं. महेन्द्रकुमार जैन -- ७
डॉ. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य का बहु आयामी व्यक्तित्व एवं वैदुष्य --------------------------------१२
पं. महेन्द्रकुमारजीकी मृत्यु पर जैनसन्देश का सम्पादकीय -- २६
डॉ. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य द्वारा प्रतिपादित नियतिवाद एक समीक्षा -------------------------- २९

खण्ड-३ – कृतियों की समीक्षाएँ

तत्त्वार्थवृत्ति – एक अध्ययन – प्रो. उदयचन्द्र जैन --- १
आचार्य अनन्तवीर्य की सिद्धिविनिश्चय टीका का वैदुष्यपूर्ण सम्पादन – एक समीक्षा – डॉ. दरबारीलाल कोठिया -- १०
पं. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य के द्वारा सम्पादित एवं अनूदित षड्दर्शनसमुच्चय की समीक्षा – डॉ. सागरमल जैन -- १५
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड का सम्पादन – एक समीक्षा – डॉ. फूलचन्द्र जैन प्रेमी ---------------------- १९
डॉ. महेन्द्रकुमारजी द्वारा सम्पादित न्यायकुमुदचन्द्र – डॉ. जयकुमार जैन -------------------- २३
न्यायकुमुदचन्द्र और उसके सम्पादन की विशेषताएँ – डॉ. सुदर्शनलाल जैन ------------------ २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्यायविनिश्चयविवरण – एक मूल्यांकन – डॉ. शीतलचन्द्र जैन ------------------------------- २८
अकलंकदेव विरचित तत्त्वार्थवार्तिक का सम्पादन कार्य – एक समीक्षा – डॉ. फूलचन्द्र जैन प्रेमी --- ३०
अकलंक ग्रन्थत्रय – एक अनुचिन्तनल – डॉ. कमलेशकुमार जैन ----------------------------- ३४
विविध तीर्थकल्प एक समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल ------------------- ३८
जैनदर्शन – एक मौलिक चिन्तन – श्री निर्मल जैन --- ४३
खण्ड-४ – विशिष्ट निबन्ध
अकलंकग्रन्थत्रय और उसके कर्ता --- १
न्यायविनिश्चय और उसका विवेचन --- ७४
आचार्य प्रभाचन्द्र और उसका प्रमेयकमलमार्तण्ड -- १२६
तत्त्वार्थवृत्ति और श्रुतसागरसूरि-- १८५
जैनदर्शन और विश्वशान्ति --- २५५
तत्त्वनिरूपण --- २५८
षड्द्रव्य विवेचन --- २८३
नय-विचार -- ३१२
अनेकान्तदर्शन की पृष्ठभूमि -- ३३३
अनेकान्तदर्शन का सांस्कृतिक आधार --- ३३८
क्या स्याद्वाद अनिश्चयवाद है --- ३४४
जैन अध्यात्म -- ३५३
निश्चयनय सर्वज्ञता और अध्यात्म भावना -- ३६०
प्राचीन नवीन या समीचीन--- ३७२
जैन अनुसंधान का दृष्टिकोण --- ३७४
सर्वोदय की साधना --- ३७६
नियतिवादी सद्दालपुत्त -- ३७९
श्रमण प्रभाचन्द्र -- ३८३
अमृतदर्शन -- ३८७
जटिल मुनि -- ३९०
तीर्थंकर महावीर -- ३९३
खण्ड-५ – जैनन्याय विद्या का विकास – जैनदार्शनिक साहित्य
जैन न्यायविद्याका विकास – डॉ. दरबारीलाल कोठिया --- १
जैनदार्शनिक साहित्य – डॉ. महेन्द्रकुमार जैन -- १४
परिशिष्ट-स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के पदाधिकारी सम्पादक मण्डलका परिचय ------------- २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org